अन्तरा-शब्दशक्ति

सुनो! मन...

काव्य संग्रह

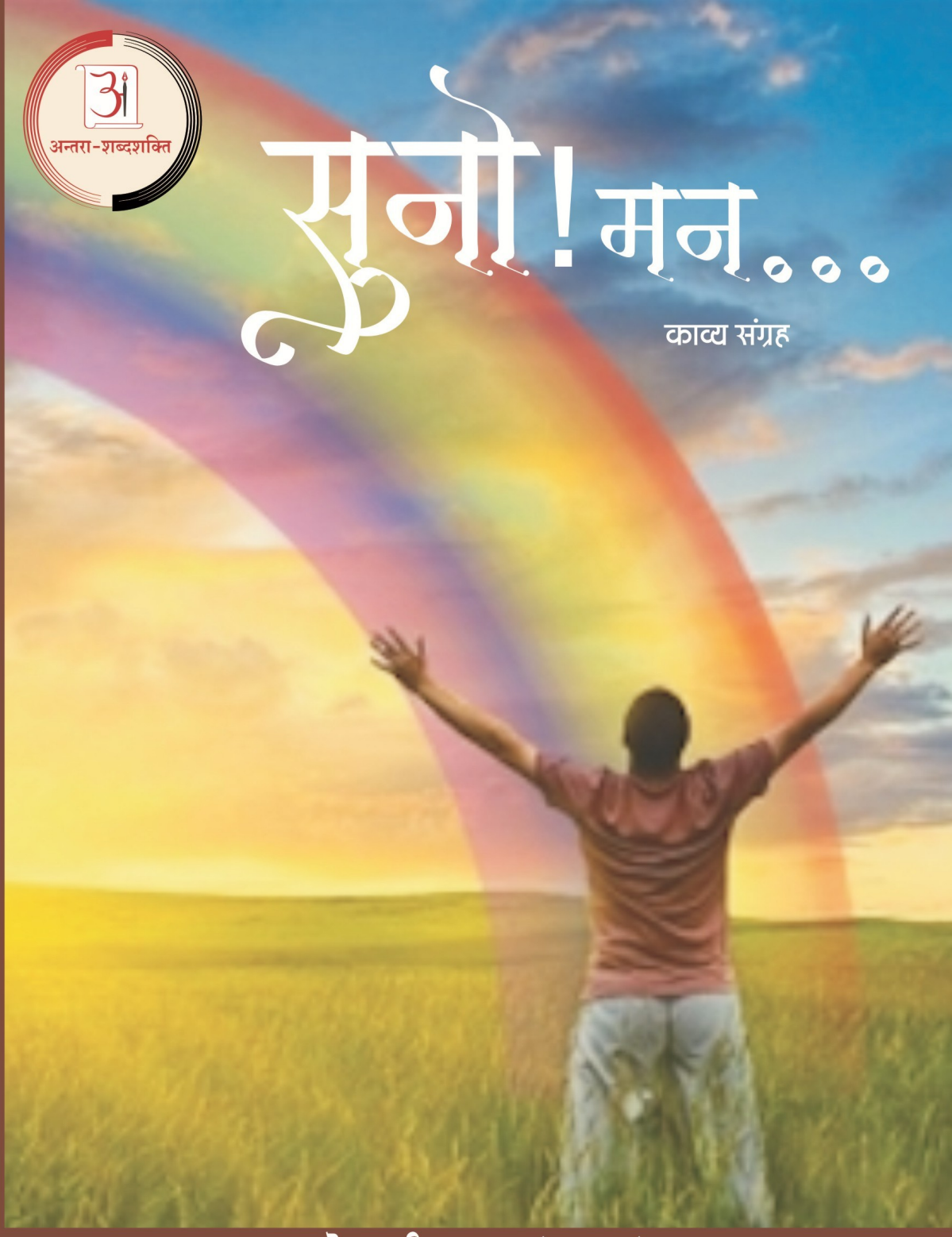

नरेन्द्र श्रीवास्तव 'अटल'

सुनो! मन,..

काव्य संग्रह

नरेन्द्र श्रीवास्तव 'अटल'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- "978-93-5372-030-8"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com
प्रथम संस्करण २०१९- नरेन्द्र श्रीवास्तव 'अटल'
मूल्य - ६०.०० रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी,वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
SUNO! MANN,.. BY NARENDRA SHRIVASTAV 'ATAL'
वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रमणिका

	मनकही!	5
1.	सुनो! मन	7
2.	जरूरत	8
3.	बारिश	9
4.	प्यार	10
5.	तितली	11
6.	समन्दर	12
7.	रूह	13
8.	पंछी	14
9.	योद्धा	15
10.	सपना	16
11.	सनम	17
12.	कसूर	18
13.	हम दोनों	19
14.	मन	20
15.	सफर	21
16.	झूठ	22
17.	अधूरापन	23
18.	नज़ारे	24

19. कसौटी 25
20. डर 26
21. दूरियाँ 27
22. ज़िन्दगी 28
23. तारा 29
24. हिम्मत 30
25. अभागन रात 31
26. मन की व्यथा 32

मनकही!

जीवन के बते कदमों ने जैसे ही दूसरा कदम उठाया ही था कि पता चला की मैं अब युवा हो गया हूँ। तब मेरी सोच बचपन के खिलौनों से हट कर कुछ और ढूंढ रही थी जो मन को अच्छा लगे। कभी खेल, पढ़ाई से ध्यान हटता था तो मन का सूना कोना कुछ अधूरा सा लगता था। कभी नर्मदा के घाट पर जा बैठना और यह सोचना की आखिर क्या कमी है मुझमें?

ऐसे में एक दिन मेरे मित्र ने मुझे मजाक में कहा कि तुम अनमने से रहते हो कहीं तुम्हें प्यार तो नहीं हो गया। मैंने कहा कुछ भी मत बोल यार मैं इन बातों से परे हूँ पर ठीक वहीं मेरा मित्र पहली बार प्यार शब्द को मन मे प्रश्न बनकर छोड़ गया कि आखिर प्यार मोहब्बत इश्क है क्या?
गरीबी के चलते दूसरों के जैसे ठाठ-बाट न होने के कारण कौन करेगा मुझसे मोहब्बत बस यही कुंठा हृदय में घर कर गयी थी। तभी मेरे मन ने मन से ही मुहब्बत कर ली।

बचपन से भावुक मैं भावुक मन का रहा हूँ, और माँ शारदा की कृपा से अपने राष्ट्र के साथ-साथ हिन्दी से भी विशेष लगाव रहा है। एकाकीपन में अपनी भावनाएं अपने ही मन को समझाने और बताने लगा। हिन्दी से प्रेम और हाथ में कलम और मेरा मन जिससे मुझे मुहब्बत हुई और मन में उठती भावनाओं की तरंगें। मेरा मन ही मुझसे मेरा सुख-दुःख सब बाँटने लगा। उस वक्त मन की अभिव्यक्ति में जो शब्द निकले उसे कविता अकविता की श्रेणी में न रखते हुए डायरी के पन्नों में संजोता चला गया।

आज जब साहित्य के पथ पर कदम बढ़े। मंचों पर काव्यपाठ करने के साथ-साथ लेखन को नई दिशा, नई सोच, नए अनुभवों ने प्रभावित किया। साहित्य का अगला मोड़ और पड़ाव आने वाला समय और माँ शारदा ही निर्धारित करेंगी।

पर जब भी रचनाओं को प्रकाशित करवाने की बात मन में आती है साहित्य जगत के पहले कदम में उम्र के अपरिपक्व दौर में लिखी मन से मन की बातें छोड़कर आगे बढ़ने का मन नहीं होता। उम्र और भावनाओं के कच्चेपन की सौंधी महक लिए कुछ कच्ची-पक्की रचनाएँ अन्तरा शब्दशक्ति के द्वारा प्रकाशित

इस छोटे से संकलन में यानि मेरी पुस्तक 'सुनो! मन,..' के माध्यम से ज्यों की त्यों आप सभी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास है जिसमें विधा नहीं केवल भावनाएँ ही प्रधान है। आपके सभी पाठकों के आशीर्वाद और प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

नरेंद्र श्रीवास्तव 'अटल'
महेश्वर

सुनो! मन

सुनो! मन,
एक बात बताता हूँ।
जो शायद तुम सोच
भी नहीं सकती।
ये हाल-ए-मोहब्बत है,
ये जाम-ए-इश्क है।

कभी उसकी याद
में तड़पता है
तो कभी मिलने की
खबर से मयूर की तरह
पंख फैलाकर धरा पर
नाचने लगता है।

पर एक सच और है,
न जाने कब कैसे क्यों
बस प्यार हो गया।
अब उसका दुःख मेरा है,
मेरा सुख उसका।

समय से प्यार नहीं,
उसकी हर धड़कन से
मुझे प्यार है और
जीवन भर रहेगा।

जरूरत

कल
तक कोई
बेगाना था,
अचानक वो
हवा सा।

कब जिंदगी
में आ गया,
और जिंदगी बन गया।

पता ही न चला,
अब उसकी वैसी ही
जरूरत है मुझे।

जैसे
जीने के लिए,
शरीर को सांसों की
और सांसों को उस हवा की।

बारिश

आज
फिर बारिश आ गयी।

लंबे इंतज़ार
के बाद,
आखिर उसे
आना तो था ही।

पर
इतनी देर बाद क्यों?
जब तन और तन से
मन की तपन
बढ़ती जा रही थी।

खैर..
अब तुम भी कहीं जाना मत
क्योंकि मेरा मन अब की बार
भीगने को है, जी भर के।
तुम्हारे प्रेम की बारिश में।

प्यार

सुनो ! मन,
रोज़
जैसे ही शाम होती है।

बस
इंतज़ार हो जाता है,
शुरू उसका जिसको दिल चाहता,
धड़कनें जिसके नाम से।

तूफ़ान की तरह इच्छाओं की
आंधी ले कर बढ़ जाती है,
फिर बस ! उसके दीदार को।

आँखें दहलीज़ पर टकटकी लगाए
ठहर जाती हैं, और जब उसके
कदमों की आहट सुनायी देती है।

मन ख़ुशी से झूम उठता है,
पहले शर्म, फिर नजरों का चुराना।

फिर उसकी बाहों में सकून के पल,
यूँ लगे जैसे सब कुछ मिल गया।

उस एक पल में,
क्या यही प्यार है?

तितली

एक तितली
अचानक हवाओं में
उड़ते-उड़ते मेरे आँगन आ पहुँची।

अपने पंखो के रंगों से
सूरज की किरणों से सज्जित
रस भरे फूल पर आ बैठी।

फूल ने उसे अपनी जिंदगी समझ लिया,
क्योंकि तितली के होठों ने फूल को छुआ।

तो फूल खिल उठा,
जैसे उसे सब कुछ मिल गया।

पर यह क्या हुआ? तितली उड़ गयी,
फूल चाहता था, उसके साथ उड़ना।

तभी से फूल मुरझाने लगा,
पर जी रहा बस इस आस में,
कि तितली फिर से एक बार
उसके पास लौट आऐंगी!

समन्दर

तुम
आजकल
मन के समन्दर में,

प्यार की लहरें बन
बार-बार हिलोरें मारती हो।

तुम मुझे
अपने होने का
एहसास दिलाकर,

फिर दिल में कसक सी बस,
तुम्हें मिलने की तुम्हारी याद।
उस हवा के साथ आती है।

जिससे
मेरी धड़कन चलती है
और मैं जिन्दा केवल तुम्हारे लिए।

मेरे
जीवन के कोरे कागज़ पर,
प्रेम की स्याही, विश्वास की
कलम हो, तुम-तुम- तुम।

रूह

सुनो!
कहाँ हो तुम,
मैं कब से ढूंढ रहा था।

कई सदियाँ बीत गयी,
कई जन्म बीत गये।

बड़ी मन्नतों के बाद तुम
मिली और अब फिर गुम।

सुनो
अब सहन नहीं होगा,
क्या तुम्हें पता है।

तुम्हारे लिए उस
रब से लड़ा था मैं,
तभी तो उसने मुझे
तुम्हारा साथ दिया।

अब कोई भी तुम्हें,
मुझसे दूर नहीं कर सकता।

क्योंकि
तुम मेरी रूह में
समा गयी हो।

पंछी

वो देखो, वो पंछी,...
विशाल आकाश में उड़ रहा है।

कुछ दिन पहले
अपने घोसले से,
अम्बर में उड़ते हुए,
दूसरे पंछियों को देख सोचता था।

क्या मैं कभी उड़ पाऊँगा,..
तभी उसके पंछी मित्र ने कहा!
तुम्हें किस बात का डर है?

उसने कहा मैं निर्बल हूँ,
मैं नहीं उड़ सकता।

तब पंछी मित्र बोला
तुम तन से नहीं मन से निर्बल हो।

तुम्हें मन में
विश्वास जगाना चाहिए कि तुम उड़ सकते हो।
मन की शक्ति और
अपने पंखो पर विश्वास करो,

बस फिर उस पंछी ने कोशिश की,
मन के पंखो ने उड़ान भरी और वो
आज बिना डरे उड़ता है।
ऊँचे आसमान पर वो देखो।

योद्धा

तुम्हें पता है,
तुम कौन हो?
शायद नहीं पता,
तभी तो ऐसी बातें करती हो।

जीवन संघर्ष है,
हर कोई जूझ रहा है।
कोई दुनिया से, कोई समाज से,
कोई परिवार, तो कोई खुद अपने आप से।

मगर
सबसे बड़ी लड़ाई, खुद की खुद से होती है।
जिसमें जीतने वाला अजेय योद्धा होता है।

पर जीत कैसे मिले?
यह न सोचते हुए,
तुम्हारा मन
सिर्फ परेशानियों को देख हार मानता है।

क्या तुमने अपने आप को कभी देखा है,
हाँ! तुम-तुम-तुम वही हो
जिसने
अपने प्यार के दम पर मुझे जीता।

फिर तो तुम कभी हार ही नहीं सकती।
क्योंकि मुझे भी तो तुमने ही
जीतना सिखाया मन के डर से।

सपना

आज मन की बात
कहने की इच्छा हो रही,
वो बात जो कभी अंदर ही अंदर
सुई की तरह चुभती थी।

पर अब वही बात फूलों
की खुशबू की तरह महक रही है।

एक बुरा सपना
जो जीवन में केवल अकेलापन
महसूस कराता था।

आज वही रात है, वही सपना है,
पर सब कुछ बदला-बदला सा है।

क्योंकि
अब जीवन वीरान नहीं है,
अब कोई है, जो जीवन के रंगो को
हाथों में ले मेरे साथ है।

वो
तुम हो तुम,
सिर्फ तुम।

सनम

मन तड़पता है,
उसके लिए, जिसको मेरा दिल,
मेरी धड़कन अपना समझती है।

और सांस हर पल उसी के
नाम की माला जपती है।

इतना ही नहीं,
मेरी बाहें जिसको
खुद में समेट लेने को आतुर है।

बस
थोड़ी शर्म, थोड़ी झिझक,
पर इन आँखो को
उसका ही इंतज़ार है।

वो मेरी
मोहब्बत, इश्क, प्यार है,.
कब आएगी सामने
और मैं कर पाऊँगा उसका दीदार।

इंतज़ार है कर लूं
जी भर प्यार अपने सनम को।

कसूर

आजकल
मेरे साथ कुछ ऐसा हो रहा है,
जो शायद पहले नहीं हुआ।

रात को नींद न आना और बार-बार
दीवार पर लगे आईने में जाकर
अपने आप को देखना,
अपने आप से बातें करना।

कभी खुश हो कर कहना,
मैं हमेशा ऐसे ही खुश रहूँ और जब
मन दु:खे तो अपने आप को कोसना।

मगर आईने से पूछा उसके दिल में क्या?
यदि पूछते तो वह कहता मैं तो सच दिखाता हूँ।

पर मैं भी तेरे ग़म में
शामिल हो दु:खी हो जाता हूँ
और तेरी खुशियों
में झूम कर नाच लेता हूँ।

बस मेरा कसूर
इतना है, कि मैं मौन हूँ,
पर एक सच और भी है, जो तेरा मन है।

वो तुझसे भी ज्यादा सुंदर है।
सच ! तेरी आँखों के सिवा दुनिया में रखा क्या है।

हम दोनों

तुम कहती हो,
कोई और भी दुनिया होती है।

बार-बार उसका जिक्र करती रहती हो,
पर उस दुनिया की जरूरत है क्या?
और उसकी बात ही क्यों?

जब इस दुनिया में
रिश्ते-नाते, अपनों का बंधन है,
कभी दुःख तो कभी सुख, जैसे भी हो।

पर इस दुनिया में वो अपने भी है,
जो तुमसे प्यार करते है।

हाँ !
माना कुछ तो दिल से
और कुछ दिखावा करते।

खेर।।
छोड़ो सब पर उस दुनिया की
बात करने वाली वहाँ रह पाओगी।

बिना मोहब्बत के,
शायद नहीं!
तो फिर चलो संग में चलते है,
तुम्हारी दुनिया में, 'हम दोनों'।

मन

ये मन भी न बड़ा
चंचल होता है,
कभी तो ऐसा लगता है।

जैसे यह मेरी बात मान गया
और कभी लगता है,
इससे जीतना बड़ा मुश्किल।

ये तो सुनने का नाम ही नहीं लेता,
अभी कल की ही तो बात है,
मैंने मान लिया था।

मुझे अपने प्यार
अपनी जिंदगी से मिलना ही है,
आज नहीं तो कल।

पर आज वो ही मन बेचैन है,
या कहूँ कि तड़प रहा है उनसे मिलने को,
अब रहा नहीं जा रहा उनके बिन।

मगर मन के इस व्यवहार ने,
मेरा उनके प्रति प्रेम भी दर्शा दिया।.
मेरे और उनके बीच और कुछ नहीं, सिवाय प्यार के।

सफर

आज
फिर सफर में एक
नई मंज़िल की ओर,
अंधेरी राहों से गुज़र जाना होगा।

पर अकेले कल जब
तुम साथ थे, तो कुछ और बात थी।
सफर आसान और रोशन राह,
मंज़िल तक जल्दी पहुँचाती थी।

पर अब तुम साथ नहीं हो,
सोचता हूँ,
काश! तुम फिर
साथ हो जाओ तो,

अब जीवन के उस सफर
को निकले जिसकी मंज़िल
कभी आए नहीं, और तुम।
मेरे साथ हमेशा रहो जिंदगी बन कर।

झूठ

तुम और मैं हम
दोनों अलग-अलग
पर, देखा तुमने,
तुम्हारी आँखें जब कभी रोती है।

तब दुःख का पता बताती है,
तुम्हारा चेहरा जब मुरझाए हुए
फूलों की तरह दिखता है।

तब ग़म दिखता है,
जब तुम जुबां से कहती हो,
कि सब कुछ ठीक है।
तो तुम्हारा झूठ दिखता है।

बस यह आँखें, चेहरा, जुबां
मेरे साथ भी वही सब करती है जो तुम्हारे साथ,
पर मैंने देखा है जब
तुम हँसती हो तो सारे ग़म दूर हो जाते है।

बस तुम्हें देख कर
मैं भी खुश हो जाता हूँ,
देखो तुम और मैं एक ही हैं।
आत्मा में प्रेम की तरह।

अधूरापन

आज दिन भर
कुछ अधूरा सा लगा,
ऐसा क्या छूट गया?
बार बार याद करने
पर भी लगा सब वैसा ही तो है,
जैसा रोज रहता है।

मगर
फिर भी कुछ तो है
जो कम है,
बस तभी दिल ने आवाज़ लगायी।
तुम दिमाग से मत सोचो,
मेरी नज़र से देखों।

कितना अधूरापन है आज,
मैं दिल की सुनने लगा
तो पता लगा
कि आज तो पूरा दिन
जिंदगी में
प्यार नहीं था।

तभी तो लगा
मैं अपना अस्तित्व खो चुका,
जो आज तक मेरे जीने की वजह थी।
वो प्यार फिर कब मिलेगा?
पूछूं रब से या उससे जिसे
ये मन रब मानने लगा है।.

नज़ारे

देखो!
रोज सूरज निकलता है,
रोज शाम होते ही ढलता है।
रात आती है,
संग चाँद लाती है।

चाँदनी और तारे आसमां में
अपनी छटा बिखेरते है।
मन को इतने भाते है,
लगता है, अपने हाथों से उन
तारों को तोड़ लाऊँ तुम्हारे लिए।

मगर ऐसा नहीं होता,
फिर भी रोज मुझे
ये सब नज़ारे दिखते हैं।
बस केवल तुम नहीं दिखते,
आखिर कब मिलना होगा किस्मत में।

कब तक रहना होगा ऐसे दूर,
सुनो! बस सुनो,
कहना कुछ मत।
मुझे तुम बिन नहीं जीना,.
आ भी जाओ..... सच।

कसौटी

तुम जब मिली,
अजनबी थी तुम और मैं भी तो।
अजनबी ही था,
तुम्हारे लिए
पर यह कैसे हुआ।
जो कभी सोचा न था,
वो हो गया।

हाँ ! प्यार हो गया,
तुम और मैं अब एक ही है।
लेकिन कभी-कभी लगता है,
हमारे बीच ये दूरी कैसी?

शायद यह वक्त की कसौटी है,
जो कस रही हमारे प्रेम के खरेपन को।
तो हम भी तैयार हैं,
उसकी कसौटी पर खरे उतरने के लिए।

यक़ीनन
तुमसे दूर अब नहीं, कभी नहीं,
दूर तो तुम हो ही नहीं सकती।
क्योंकि तुम मेरी धड़कन हो
और जब धड़कन रुकी तब ही दूर हो पाऐंगे।
केवल तन से मन से नहीं।

डर

अभी व्यस्त हूँ, कुछ ढूंढ़ रहा हूँ
पर मिल नहीं पा रहा उसका ठिकाना
"डर" नाम है उसका,...

आज सबसे पहले मन में ढूंढा
तो वह बाहर दुनिया में दिखा,
जब दुनिया में ढूंढा, तो वह हर
किसी की किस्मत के साथ जुड़ा दिखा।

झूठ को सच का डर, आग को पानी का डर,
जानवर को इंसान का, इंसान को भगवान का।
पर इंसान को सबसे बड़ा डर
खुद से भी लगता है, यह जरूर में ढूंढ पाया।

कुछ खोने का डर, पाने के साथ कहीं
उसे खो ना दूँ, डर लगा रहता है।
पर मुझे इसे पाकर खोने के डर को खत्म करना है।

बस प्यार की जंज़ीर ही है,
जो पाये हुए को बांध सकती है।
हमेशा के लिए, जिसे खोना न
चाहो उसे बांध लो प्यार के बंधन में।

कसकर फिर कोई छिन नहीं सकता,
फिर वह सिर्फ तुम्हारा और हमेशा के लिए डर खत्म।
ये ही तो है, प्यार की ताकत, जिसमें शामिल है, मेरी जीत।

दूरियाँ

तुम
बहुत समझदार हो,
पर क्या कभी सोचा
कि मैं तुम्हें जानबूझकर
कोई तकलीफ़ दे सकूँगा।

वैसे भी दुनिया में कम ही लोग है,
जो मेरे अपने है, उनमें से तुम भी हो।

क्या कोई अपनों को
खोने का सोच सकता है?
तुम दुश्मन नहीं दोस्त हो।

मौत नहीं जिंदगी हो,
तो भला दूर कैसे कर सकता हूँ।

सोचो
दूरियाँ हम ही बनाते है,
सिर्फ सोच से और रही खाई की बात
तो विश्वास की डोर अभी टूटी नहीं है।

दरार
इस जन्म में तो पड़ने नहीं दूँगा,
चाहे फिर खुद को मिटाना क्यों न पड़े,
तुम्हारे लिए।

ज़िन्दगी

ज़िन्दगी
सिर्फ एक बार मिलती है यहाँ,
इसकी राह में
कहीं कांटे तो कहीं फूल मिलते हैं।

इसे ही हम ग़म या ख़ुशी कह सकते हैं,
पर क्या तकलीफों के आने पर केवल
इतना सोचना ठीक है।

कभी ख़ुशी से मिलना नहीं होगा,
ऐसा नहीं, हमें चाहिए कि
जिंदगी के खट्टे मीठे पलों को जीयें।

क्योंकि
यही जिंदगी के जीने के तरीके है,
तेरा दु:ख मैं बांटू, मेरा दुख तू,
और सुख के पल साथ जी लें।

बस यूँ ही कट जायेगा ये सफ़र,
पर कुछ और भी जरूरी है।

जिससे जिंदगी का
सफ़र सरल हो सकता है,
वो है, एक दूसरे से प्रेम और विश्वास, है न?

तारा

सुनो!
आज मन फिर से दु:खी है,
कल ही तो इसे समझाया था।

पर अब तो लगता है,
ख़ुशी के सपने देखना ही छोड़ दूँ।

क्योंकि सपने तो सपने हैं,
कभी टूट जाते हैं, कभी पूरे
भी होते पर कुछ पल के लिए।

क्या जीवन में हमें
समझ नहीं आता,
इन सपनो से आस रखें या नहीं।

खैर छोड़ो मैं फिर से कुछ
खुशियों को जोड़ने की जुगत लगता हूँ,
शायद कामयाब हो जाऊँ।

पर नहीं हो पाया तो
मिलेगी तो वही काली रात, जो
हर दिन बीत जाने पर आ जाती है।

दु:खों के साथ,
पर सुनो तुम उम्मीदों के
आकाश पर टिमटिमाता तारा
बनकर हमेशा साथ रहोगी न।

हिम्मत

सुनो!
मैं हमेशा तुमको कहता हूँ,
तुम अपने अंदर
खुशियों को तलाशो।
वो मन के किसी कोने में रह रही है,
वो भी चाहती है, तुमसे मिलना।

पर तुम हमेशा हिम्मत हार जाती हो,
तुम्हारे इसी स्वभाव के कारण
ख़ुशी भी दुःखी है।
तुम मेरे लिए सिर्फ इतना काम करो,
खुद के लिए जियों खुद में छुपी
खुशी से दोस्ती कर लो।

और देखो
ठीक उसी तरह,
जिस तरह तुम्हारी
तस्वीर में तुम्हारा रंग है।
वो तुम्हारे मन की दुनिया भी
रंगीन कर देगा।

अभागन रात

मन मेरा भी करता है,
मन में छुपी सारी बात तुमसे करुँ।
खुशियों के वो पल जिसको पा कर
मुझमे जीने की उमंग आती है।

तो कभी ग़मो की वो बारिश
जो मेरे अश्क बन मुझे हमेशा भिगोकर चले जाते हैं।

मैं अपना दर्द, किसके कंधे पर
अपना सिर रख रो कर मन हल्का कर सकूँ।

शायद मेरी किस्मत मेंअँधेरा ही अँधेरा है।
मेरे साथ मेरे अनसुलझे हुए सवाल,
मेरी आखरी साँस तक मेरे साथ रहेंगे।

क्योंकि मैं अभागन रात,
रोती रही रात भर
पर मुझे सुनने वाला कोई न मिला।

जब मैं आती हूँ मिलने सब सो जाते हैं,
जागती रहती हूँ, तो बस मैं और केवल मैं
क्या तुम जागोगे मेरे लिए रात भर.....!

मन की व्यथा

कल की तो बात है जब घर से निकला था।
कुछ अच्छा करने अपने लिए नहीं दूसरों के लिए।
बचपन में माँ से सुने किस्सों का जो असर था।
मैं निकल पड़ा उस मंज़िल को पाने।
जिसका रास्ता तो मिला पर मंज़िल नहीं,
क्योंकि जब घने जंगलों के बीच पहुँचा
तो खुद को भूल गया।

खुद की नहीं सारे रिश्तों को भुलाकर,
सिर्फ उनकी चिंता की जो असहाय थे।
यह भी एक जीवन था।
जिसे जीने की कोशिश की।
पर यह क्या उसी जंगल में कुछशिकारियों
ने जानवरों के साथ-साथ मेरा भी शिकार कर दिया।
क्योंकि उन शिकारियों कोउस जंगल पर कब्जा करना था।

बात यहाँ खत्म नहीं हुई,
मुझे मेरे शिकार का ग़म नहीं,
दुःख सिर्फ इस बात का,
कि शिकारी आज भी शिकार कर रहा है।
उसे सजा कौन देगा?
उसका अट्टहास बढ़ता जा रहा है।
पर मेरी मन की व्यथा अब कोई नहीं सुनता! ईश्वर भी नहीं?

व्यक्तित्व दर्पण

नाम	- नरेन्द्र श्रीवास्तव 'अटल'
माता	- श्रीमती उमा देवी श्रीवास्तव
पिता	- श्री राजेन्द्र श्रीवास्तव
पत्नी	- श्रीमती कीर्ति श्रीवास्तव
जन्म	- 16 मार्च 1983
शिक्षा	- बी.ए. (हिन्दी साहित्य)
विधा	- गीत, ग़ज़ल, मुक्तक, छंद
पता	- कालिदास मैदान के पास, नर्मदा रोड़, पोस्ट महेश्वर, जिला खरगोन (म.प्र.)
ई मेल	- narendraatal1111@gmail.com
मो.	- 7000147768, 9009939111
प्रकाशन	- देश की साहित्यक संस्थाओं में समय-समय पर काव्य संग्रहों में कविताएं।
सम्मान	- देश के प्रतिष्ठित मंचो से काव्य पाठ एवं सम्मान से सम्मानित।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-030-8
मूल्य- 60/-